Scholarly Research Journal for Interdisciplinary Studies
Online ISSN 2278-8808, SJIF 2024 = 8.153
https://www.srjis.com/issues_data/236
Peer Reviewed & Refereed Journal, JULY-AUG 2024, Vol- 13/84

श्रीमद्भगद्वगीता में निहित शैक्षिक मूल्यों की वर्तमान प्रासंगिकता

ओमवती चौधरी
शोध–छात्रा, संस्कृति विश्व विद्यालय, मथुरा
डॉ. रैनू गुप्ता
(शोध निर्देशिका), शिक्षा विभाग, संस्कृति विश्व विद्यालय, मथुरा

Paper Received On: 20 July 2024
Peer Reviewed On: 24 August 2024
Published On: 01 September 2024

Abstract

गीता का अमर संदेश शाश्वत और सर्वव्यापी है। गीता की शिक्षाओं का भारतीय दर्शन पर स्थायी प्रभाव पड़ा है। इसने मानव समाज को जो धार्मिक सहिष्णुता सिखाई वह आज भी अनुकरणीय है। भगवद्गीता की शिक्षाओं में धार्मिक सहिष्णुता की भावना प्रदान की जाती है, जो हिन्दुत्व की एक आधारभूत विशेषता है। कर्म को अकर्मण्यता से श्रेष्ठ बताते हुए निःस्वार्थ भाव से कर्म करने की आज्ञा गीता की सर्वव्यापक विशेषता है। आज के भारतीय परिवेश में जहाँ भ्रष्टाचार और बुराइयाँ व्याप्त हैं, निष्काम कर्म योग का उपयोग और भी अधिक बढ़ जाता है। भगवद्गीता पुरुषोत्तम और मुक्त आत्मा को नसीहत देती है जो लोगों के लाभ के लिए प्रयास करती है। गीता की योग्यता और योग्यता के आधार पर किसी की सामाजिक स्थिति की मान्यता का संदेश आज के युग की माँग है। आज के युग में जब लोग अपने कर्तव्यों को भूलकर अपने अधिकारों के लिए लड़ते हैं, तो गीता का स्वयं के (स्वधर्म) जैसे कर्म करने का आदेश और भी उपयोगी हो जाता है। अनादि काल से इसने भारतीय समाज को एकता के सूत्र में बाँधा है और लोगों में कर्तव्य की भावना जागृत की है।

पारिभाषिक शब्दः *शैक्षिक मूल्य, शैक्षिक दर्शन, प्रासंगिकता, आध्यात्म।*

तथ्य विश्लेषण एवं परिलब्धियाँः

श्रीमद्भगवत गीता भारतीय बुद्धि का भावपूर्ण, अमूल्य खजाना है, संसार के सरोवर से निकलने वाला मधुर राग है तथा यह भटकने वाले प्राणियों के लिए एक अनूठा मधुर मार्ग है। ज्ञान भण्डार उपनिषदों का यह सार सर्वस्व है। इस ग्रन्थ की महनीयता इस बात से ही लगाई जा सकती है कि जितनी

Copyright © 2024, Scholarly Research Journal for Interdisciplinary Studies

व्याख्या इस ग्रन्थ की हुई है उतनी व्याख्या किसी दूसरे ग्रन्थ की अब तक नहीं हुई है। यह विश्वविख्यात भारतीय संस्कृति का अक्षुण्य भण्डार है।[1]

मानव जीवन के प्रति एक व्यक्ति का दृष्टिकोण उसके जीवन के तरीके को आकार देता है और इस प्रकार दार्शनिक विचारों की वृद्धि करते हुए शैक्षिक मूल्यों को विकसित करता है। एफ0 डब्ल्यू0 थॉमस व ए0 आर0 लॉग[2] ने कहा, सामान्य शिक्षा मूल रूप से एक शैक्षिक मूल्य, एक शैक्षिक योजना, एक पाठ्यक्रम, उस लक्ष्य को प्राप्त करने के लिए शिक्षकों, विद्यार्थियों के लिए आवश्यक शैक्षिक मूल्य आदि का आयोजन किया जाता है। शिक्षा विकास प्रक्रिया का एक महत्वपूर्ण हिस्सा है और व्यक्तियों को और अधिक सीखने में मदद कर सकती है।

आधुनिक युगीन मनुष्य, मनुष्य न रहकर मशीन बनता चला जा रहा है। वह अनेकानेक मनोविकारों से ग्रस्त होता चला जा रहा है। जब तक शिक्षा व्यवस्था को धर्म की ओर उन्मुख नहीं किया जायेगा तब तक इस समस्या का, स्थायी समाधान असम्भव है। श्रीमद्भागवत गीता सभी धर्मों, अर्थ, वासना, मोक्ष को महत्व देती है। इसी कारण से कहा गया है कि श्रीमद्भागवत गीता के जीवन मूल्य आज भी आधुनिक भारतीय शिक्षा प्रणाली के उद्देश्यों को स्थापित करने और प्राप्त करने में मदद करते हैं।

श्रीमद्भागवत गीता के अनुसार, शिक्षा प्रणाली के पाठ्यक्रम को बच्चे को अच्छी तरह से विकसित करने, कठिन जीवन स्थितियों का आसानी से सामना करने और अपने शैक्षिक लक्ष्यों के माध्यम से अपने जीवन के लक्ष्यों को प्राप्त करने में सक्षम बनाना चाहिए। पाठ्यक्रम को शैक्षिक लक्ष्यों का दर्पण माना जाता है और इसलिए इसके निर्माण में भागवत गीता में निहित तथ्य शामिल होने चाहिए, जैसे कि पाठ्यक्रम विविधता, गतिविधि, जिम्मेदार व्यक्तित्व, व्यावहारिकता, व्यावसायिकता, जीवन शैली, आदि। श्रीमद्भगद्गीता के अनुसार, मार्गदर्शन और शिक्षण छात्र की क्षमताओं, प्रतिभा और क्षमताओं पर आधारित होना चाहिए। हमें पाठ्यक्रम में उच्च स्तर के उत्साह को बनाए रखने के लिए सावधान रहना चाहिए, और बच्चों को वह कौशल सिखाया जाना चाहिए जो उन्हें सफल होने के लिए आवश्यक है। श्रीमद्भागवतगीता के प्रभाव में हमारी शिक्षा प्रणाली ने दिखाया है कि बच्चों की वर्तमान पीढ़ी को अपने अनुभव, कौशल, रुचियों और भावनाओं को प्रभावी रूप से विकसित करना चाहिए, क्योंकि अच्छे विकास के लिए

Copyright © 2024, Scholarly Research Journal for Interdisciplinary Studies

पाठ्यक्रम आवश्यक है। हम जिस समाज में रहते हैं, उसमें सुधार की जरूरत है।[3]

भारतीय समाज चार वर्गों में विभाजित था– ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य और शूद्र। सभी वर्गों ने अपने निर्धारित कर्मों के अनुसार कारोबार किया। लेकिन जीवन का मूल्यांकन कर्मों के आधार पर किया जाता है न कि जन्म के आधार पर। अर्जुन को समझाते हुए कृष्ण ने कहा–

ब्राह्मण क्षत्रियवैश्वान् शूद्राणां च परंतयं,

कर्माण प्रतिभक्तानि स्वभाव प्रभवैर्गुणौः।।18/41।।54

ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य और शूद्र के कार्यों को उनके स्वाभाविक रूप से पैदा हुए गुणों से विभाजित किया जाता है। इसका सभी को स्वागत करना चाहिए।

गीता का दावा है कि सच्ची शिक्षा वह शिक्षा है जो शरीर, मन और आत्मा का पोषण करती है। पाठ्यचर्या वह नींव है जिस पर नैतिक, शारीरिक, बौद्धिक और आध्यात्मिक गुणों को विकसित और अनुभव किया जा सकता है। उत्तम पाठ्यक्रम की विशेषताएँ–

1. पाठ्यक्रम उद्देश्य आधारित हो जिससे वातावरणीय समझ विकसित हो सके।
2. पाठ्यक्रम के माध्यम से सामुदायिक शिक्षा की सीधी समझ हो।
3. पाठ्यक्रम के विषयों के माध्यम से जीवन के महान कार्यों और आदर्शों को व्यक्त करने की समझ विकसित करना। इस प्रकार, शैक्षिक कार्यक्रम का उद्देश्य छात्रों की स्पष्ट रूप से सोचने और नए विचारों को अपनाने की क्षमता विकसित करके और अच्छी नागरिकता और अनुशासन, सहयोग, समुदाय, संवेदनशीलता और धैर्य के गुणों को विकसित करके राष्ट्रीय हित में योगदान करना है। इसलिए, पाठ्यक्रम को उद्योग, समाज और भौतिक वातावरण पर ध्यान देना चाहिए। अतः मन और आत्मा का उच्चतम विकास शैक्षिक मूल्यों के द्वारा ही प्राप्त होता है।

मनोवैज्ञानिक मैस्लो के अनुसार[4] – व्यक्ति अपनी मूलभूत आवश्यकताओं की पूर्ति में सक्रिय होकर अन्तिम अवस्था को प्राप्त होता है जो निम्न है–

(1) सुरक्षा की आवश्यकता,

(2) सम्मान की आवश्यकता

Copyright © 2024, Scholarly Research Journal for Interdisciplinary Studies

(3) शारीरिक पूर्ति की आवश्यकता,
(4) सामाजिक जुड़ाव की आवश्यकता
(5) स्वयं सिद्ध अवस्था।

यदि हम अपने छात्रों को इन जरूरतों को पूरा करने के लिए आवश्यक शिक्षा प्रदान नहीं कर सकते हैं, तो हमारे लिए इस शिक्षा का कोई अर्थ नहीं।

न कर्मणमनारम्मान्नैष्क्रष्य पुरुषोऽश्नुते
न च सन्यासनादेव स द्ध समाधगच्छति।।3/4।।56

अर्थात् कर्मों से मुँह मोड़ने से न तो कर्मों के फल से छुटकारा मिल सकता है और न ही त्याग से ही सिद्धि प्राप्त हो सकती है। इस अध्याय में आगे कहा गया है कि प्रत्येक व्यक्ति प्रकृति से विरासत में मिले गुणों से काम करने को विवश है।

गीता में कहा गया है कि जिस व्यक्ति में पूरी मानवता की सेवा करने की भावना होती है, वह निश्चित रूप से सांस्कृतिक पहलुओं से अवगत होता है। 'नरसेवा नारायण सेवा' ब्रह्मचर्य इन्द्रियों के नियंत्रण और प्रबन्धन के लिए आवश्यक है और केवल नैतिक सिद्धांतों के आधार पर सामाजिक, आर्थिक और राजनीतिक जीवन को धीरे–धीरे पुनर्वितरित करना सम्भव है। अतः मानव समाज का विकास तभी सम्भव है जब उपरोक्त सभी लक्ष्यों में सामंजस्य हो तथा विद्यार्थियों में शैक्षिक मूल्यों की स्थापना सम्भव हो। गीता के अनुसार, जो बच्चे आश्रम में जाते हैं, वे अपना समय और ऊर्जा सामाजिक गतिविधियों में लगाते हैं जिससे मानवता को लाभ होता है। यह वही है जो स्कूल वर्तमान में समाज के लाभ के लिए कर रहे हैं। चरित्र विकास एक ऐसी चीज है जो अपने आप होती है।

श्रीमद्भागवतगीता आध्यात्मिक ज्ञान के रत्न के रूप में दुनिया भर में प्रसिद्ध है। यह मानव प्रकृति, पर्यावरण और आत्म–पूर्ति के लिए एक विशेष अवसर प्रदान करता है। गीता पद्धति, ध्वनि के माध्यम से शिक्षण, आत्म–अनुभव के बारे में सीखने, आदि जैसे विषयों पर उच्च महत्व रखती है। व्यवहार के माध्यम से ज्ञान का विकास भागवत की शिक्षण पद्धति का मुख्य आधार है। भारतीय धार्मिक दर्शन उद्देश्यपूर्ण शिक्षण, योजना और नेतृत्व में विश्वास करता है।

Copyright © 2024, Scholarly Research Journal for Interdisciplinary Studies

श्रीमद्भागवतगीता आत्म–अनुशासन पर विशेष बल देती है। साथ ही, यह प्रभावी अनुशासन पर बल देती है। शिक्षण में, गुरु (श्रीकृष्ण) स्वेच्छा से शिष्य (अर्जुन) को अपने प्रभाव से ज्ञान प्रदान करते हैं। आज्ञाकारिता से आत्म–अनुशासन विकसित होता है जिसे अनुशासन का स्वर्णिम नियम कहा जाता है। महात्मा गाँधी भी इस विचार से सहमत हैं और कहते हैं कि मैं हमेशा से एक बच्चे को पीटने और शिक्षित करने के खिलाफ रहा हूँ। मैं दूसरों को आत्मज्ञान देने के बजाय खुद को समझना पसन्द करता हूँ। गीता में भी लिखा है कि–

'अज्ञाश्चाश्रद्दधानश्च संश्यात्मा विनश्यति।'

अविवेकपूर्ण, अविश्वसनीय और शंकालु व्यक्ति द्वारा शिक्षा को निश्चित रूप से नष्ट किया जाता है। अर्थात जिसका विवेक नष्ट हो गया है, जो सही शिक्षा पर विश्वास नहीं करता है, वह हमेशा वास्तविक शिक्षा से वंचित होता है क्योंकि सच्ची शिक्षा के लिए विश्वास और अनुशासन बहुत महत्वपूर्ण हैं।

हम तेजी से आधुनिकीकरण की ओर बढ़ रहे हैं। हम पैसे, कृत्रिमता, मानवीय मूल्यों से दूर जा रहे हैं। आधुनिक बालक अभिमानी, अज्ञानी है, शास्त्रों के विपरीत, श्रीकृष्ण गीता में लिखते हैं–

कामाश्रित्व दुष्पूरं दम्भमानमदान्विता।।16/17।।62

दम्भमान और मद से युक्त आसानी से अनुशासनहीन मनुष्य अतृप्त इच्छाओं के साथ संसार में भटकता है, मिथ्या सिद्धान्तों को अपनाता है और अज्ञानतावश भ्रष्ट आचरण अपनाता है। इस तरह की अनुशासनहीनता को कैसे खत्म किया जाये। क्योंकि अनुशासन के बिना व्यक्ति पतवार बिना नाव की तरह होता है क्योंकि शिक्षा में अनुशासन की भावना निहित होती है। नार्मन मैकनल्टी ने अपनी पुस्तक में तीन प्रकार के अनुशासन का वर्णन किया है–

(1) दमनकारी,

(2) मुक्ति और

(3) प्रभावी।

मुक्तात्मक अनुशासन प्रकृतिवादियों को प्रिय है तो प्रभावात्मक अनुशासन का आधार नैतिकता कही जाती है।

एक शिक्षक में परिस्थितिवाद के सभी लक्षण होने चाहिए।

गीता के अनुसार– वीतरागमय क्रोधः स्थितधीमु निरुच्यते।।4/10।।66

Copyright © 2024, Scholarly Research Journal for Interdisciplinary Studies

अर्थात् जो रागमय और क्रोध मुक्त हो गया है, वह स्थिरप्रज्ञ कहलाता है। इस प्रकार शिक्षक अचल, ज्ञानी, मातृभाषा रखने वाला, पाठ्यक्रम के निर्धारित विषय को जानने वाला, कलात्मक और रचनात्मक ज्ञान जानने वाला, बाल मनोविज्ञान को जानने वाला, शिक्षण, भावनाओं, स्वभाव में कुशल होना चाहिए। छात्रों के हितों, बुद्धि आदि के प्रति जागरूक रहें। व्यक्तिगत मतभेदों का ज्ञान, जो समय, प्रयास और धन की बर्बादी को रोक सकता है। समाज के चार स्तम्भ (शिक्षक, माता–पिता, नेता और उपदेशक) माने जाते हैं।

1. विद्यालय में पाठ्यपुस्तक ज्ञान के बजाय व्यावहारिक ज्ञान पर जोर दिया जाना¬ चाहिए।
2. विद्यालय हमारे सामाजिक जीवन का प्रतिबिम्ब व प्रतिनिधि होना चाहिए।
3. विद्यालय शिक्षा जीविकोपार्जन का साधन होना चाहिए।
4. विद्यालय आत्मनिर्भरता का केंद्र, अनुभव के माध्यम से सीखने की व्यवस्था होनी¬ चाहिए।
5. विद्यालय में छात्र हितैषी वातावरण होना चाहिए ताकि वह घर जैसा महसूस¬ करे।
6. विद्यालयी वातावरण स्नेहयुक्त, सहानुभूतिपूर्ण तथा प्रेम से ओतप्रोत होना चाहिए।
7. विद्यालयी व्यवस्था गीता के गुरुक ुल की भाँति हो क्योंकि अर्जुन ने द्रोणाचार्य के¬ गुरुकुल में तथा श्रीकृष्ण ने संदीपन मुनि के गुरुकुल में शिक्षा प्राप्त की थी।

संदर्भ

गीता माधुर्य, स्वामी रामसुख दास, गीता प्रेस, गोरखपुर, पृष्ठ सं0 167

श्रील प्रभुपाद (2014), "श्रीमद्भगवतगीता यथारूप, भक्तिवेदान्त बुक ट्रस्ट हरे कृष्णधाम, जुहू, मुम्बई पृष्ठ सं0 475

ए हैण्डबुक ऑफ सजेशन, पृष्ठ सं0 37

Handbook of suggestion for the consideration of teachers and arts concerned in the work of pupil elementry schools' His Majesties Stationary Office, London, p. 12

अब्राहम, आवश्यकता का सिद्धान्त, शिक्षा मनोविज्ञान, पृष्ठ सं0 405

Copyright © 2024, Scholarly Research Journal for Interdisciplinary Studies